प्रेस विज्ञप्ति

हिन्दुस्तान कॉलेज में ''ह्यूमन वैल्यूज एण्ड प्रोफेशनल एथिक्स'' पर 8 दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का समापन समारोह

डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा एवं राम मनोहर लोहिया, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद के पूर्व कुलपति प्रो. जी.सी. सक्सैना ने 20 इंजीनियरिंग कॉलेज के शिक्षक प्रतिभागियों का मार्गदर्शन

''गोधन, गजधन, बाजधन और रतन धन खान, जब आवें संतोष धन सब धन धूरि समान'' आज भी सार्थक है– प्रो. सक्सैना

शारदा ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के प्रतिष्ठित संस्थान हिन्दुस्तान कॉलेज ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी में ''ह्यूमन वैल्यूज एण्ड प्रोफेशनल एथिक्स'' पर आयोजित 8 दिवसीय कार्यशाला का आज आज के दिन विधिवत समापन सम्पन्न हुआ। जिसके मुख्य अतिथि डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा एवं राम मनोहर लोहिया, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद के पूर्व कुलपति प्रो. जी.सी. सक्सैना रहे।

संस्थान के निदेशक डॉ. राजीव कुमार उपाध्याय ने अपने स्वागत सम्बोधन में मुख्य अतिथि का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया और कहा कि शिक्षा के द्वारा ही सही संस्कार विकसित किये जा सकते हैं तथा ऐसी कार्यशालायें चलती रहनी चाहिए जिससे मानव अपना मूल्यांकन ठीक ठीक कर पाता है। उन्होने सभी प्रतिभागियों का कार्यशाला में आने पर उनका धन्यवाद दिया और संक्षिप्त सम्बोधन में एकेटीयू के कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक का हिन्दुस्तान कॉलेज को ''ह्यूमन वैल्यूज एण्ड प्रोफेशनल एथिक्स'' के फैकल्टी डवलपमेंट प्रोग्राम हेतु नोडल सेंटर बनाये जाने पर आभार व्यक्त किया साथ ही इस आठ दिवसीय कार्यशाला की महत्ता पर प्रकाश डालते हुये सभी प्रतिभागी शिक्षकों से इससे आत्मसात कर जीवन में उतारने एवं समाज में इसके पहलुओं को फैलाने की आशा व्यक्त की।

कार्यशाला के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में आये प्रो. जी. सी. सक्सैना ने अपने संबोधन में बताया कि शिक्षा तथा संस्कार का काम बचपन से ही शुरु हो जाता है जब बच्चा माँ से किसी वस्तु की जिद्द करता

है तब माँ उसको अनेक तरीके से समझाती है। यही वह क्षण होते हैं जब वह परिवार के दिये हुए मूल्यों को समझता है तथा अपने अंदर संस्कार के रुप में उतारता है। उन्होने कहा कि भारत में मूल्य शिक्षा परंपरा में ही रही है। यहाँ परिवार व्यवस्था शुरु से ही मजबूत रही है जिससे बच्चों के अंदर संबधपूर्वक जीने की योग्यता विकसित हो जाती है। श्री सक्सैना ने रामायण, महाभारत और गीता महाग्रंथों से संदर्भित कर नर–नारी के तमाम गुण धर्म की चर्चा की और बिन्दुबार ग्रहस्थ में सुख की प्राप्ति तथा समाज एवं देश के उत्थान हेतु मानव के कर्तव्यों की चर्चा करते हुये बताया कि केवल मानव जीवन ही सर्वश्रेष्ठ जीवन है जिसके जरिये हम परमपिता परमेश्वर की प्राप्ति कर सकते हैं। प्रकृति से हम सबकुछ पाते हैं और बदले में प्रकृति को वापस कुछ भी नहीं करते हैं यह एक विचारणीय मुददा है जिसपर इस तरह के कार्यक्रमों के जरिये मानव अलख जगाने की एवं जन–जागरण अभियानों की आज के समय में विशेष आवश्यकता है।

कार्यक्रम के दौरान कुछ विशेष प्रतिभागियों से कार्यक्रम के बारे में प्रतिक्रियाओं का भी एक सत्र रखा गया जिसमें सभी प्रतिभागियों में इस कार्यशाला को अत्यंत आवश्यक एवं एकेटीयू द्वारा एक उचित कदम बताया गया।

कार्यक्रम का सफल संचालन मानविकी विभाग की सहायक आचार्य श्री शशी शेखर ने किया। धन्यवाद ज्ञापन मानविकी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. केशव देव ने किया।